आचार्य जिनसेन (प्रथम)

जीवन-परिचय : आचार्य जिनसेन प्रथम पुन्नाटसंघ के विद्वान आचार्य थे। यह एक ऐसे प्रबुद्धाचार्य हैं, जिनकी वर्णन-क्षमता और काव्य-प्रतिभा अपूर्व है। पुन्नाट कर्नाटक का प्राचीन नाम है। आचार्य जिनसेन के दादागुरु का नाम जयसेन और गुरु का नाम अमितसेन था। इनके अग्रज धर्मबन्धु कीर्तिषेण मुनि थे। जो बहुत ही शान्त और बुद्धिमान थे। इन्हीं कीर्तिषेण के शिष्य आचार्य जिनसेन थे।

आचार्य जिनसेन ने ग्रन्थ-रचना का समय स्वयं अपने ग्रन्थ में दिया है। उसके अनुसार हरिवंश-पुराण की रचना शक संवत् 705 (ई. सन् 783) में सम्पन्न हुई है। यदि हरिवंश-पुराण के समय कवि की आयु 30-35 वर्ष की मानी जाय तो कवि का जन्म अनुमानत: ई. सन् 748 के लगभग आता है।

रचना-परिचय: आचार्य जिनसेन की एक ही रचना प्राप्त है—

1. हरिवंशपुराण : यह हरिवंशपुराण दिगम्बर सम्प्रदाय का प्रमुख पुराण-ग्रन्थ है। इसमें 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ का चरित्र निबद्ध है, पर प्रसंगोपात्त अन्य कथानक भी लिखे गये हैं। भगवान नेमिनाथ के साथ नारायण श्रीकृष्ण और बलभद्र पद के धारक श्री बलराम का भी चरित्र अंकित है। पाण्डवों और कौरवों का चरित्र भी सुन्दरता के साथ निबद्ध है। कथावस्तु 66 सर्गों में विभक्त है। ग्रन्थ का कथाभाग अत्यन्त रोचक है। भगवान नेमिनाथ के वैराग्य का वर्णन पढ़कर प्रत्येक मानव का हृदय सांसारिक मोह माया से विमुख हो जाता है।

66वें सर्ग में भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्परा का वर्णन है, जो बहुत उपयोगी है।

हरिवंशपुराण ज्ञानकोष है। इसमें कर्म-सिद्धान्त, आचारशास्त्र, तत्त्वज्ञान एवं आत्मानुभूति सम्बन्धी चर्चाएँ निबद्ध हैं। यह पुराणग्रन्थ होने पर भी उच्चकोटि का महाकाव्य है।